Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

हरियाणा के हिन्दी – महाकाव्य

Reena Saroha*

M.A. Hindi, UGC NET (Hindi) Research Scholar, Department of Hindi, NIILM University, Kaithal, Gaon & Post-Ranthdhana, District-Sonipat, Haryana

सार – हरियाणा साहित्य-सृजन की उर्वरा भूमि है। वैदिक काल से लेकर आज तक इस प्रदेश में साहित्य की विपुल मात्रा में साहित्य-सृजन हुआ है। अन्य भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी में अत्यधिक सृजना हुई है। जब हिन्दी के साहित्य पर दृष्टि डालते हैं तो महाकाव्य की विपुल मात्रा में सृजना हुई है। प्राचीनकाल से आज तक महाकाव्य की सरिता निरन्तर बह रही है।

---------------------------------x---------------------------------

संस्कृत आचार्य भामह के अनुसार लम्बे कथानक वाला, महान् चरित्रों पर आश्रित, नाटकीय पंच संधियों से युक्त, उत्कृष्ठ और अलंकृत शैली में लिखित तथा जीवन के विविध रूपों और कार्यों का वर्णन करने वाला सर्गबद्ध काव्य ही महाकाव्य होता है।[1] दंडी-विश्वनाथ, हेमचन्द्र आदि आचार्यों ने भी महाकाव्य की परिभाषाएँ दी हैं।

कुछेक आचार्यों ने ‘सर्गबद्धों महाकाव्य’ की संज्ञा दी है अर्थात् महाकाव्य सर्गबद्ध होना चाहिए। लेकिन डॉ. नगेन्द्र ने उदात्त कथानक, उदात्त चरित्र, उदात्त भाषा-शैली पर बल दिया है। हिन्दी के अधिकांश कवियों ने डॉ. नगेन्द्र के मत का अनुसरण किया है।

जब हम भारत के रंगमंच पर खड़े होकर देखते हैं तो पाते हैं कि हरियाणा में महाकाव्यों की सृजना विपुल मात्रा में हुई है। डॉ. रामनिवास मानव के अनुसार, ‘हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप युग-परिवेश और मानव सभ्यता के विकास के साथ निरन्तर विकसित-परिवर्तित होता रहा है। विश्व की अधिकतर भाषाओं की भाँति, हिन्दी में भी महाकाव्य का प्रारंभ वीरगाथाओं से ही होता है। ‘चन्दवरदाई कृत पृथ्वीराज रासो’ इस परम्परा की प्रथम कड़ी है।’[2]

‘मानव’ ने हरियाणा में हिन्दी काव्य-परम्परा का प्रारंभ तुलसीराम शर्मा ‘दिनेश’ कृत पुरुषोत्तम महाकाव्य से प्रारम्भ माना है। इस महाकाव्य में भगवान श्रीकृष्ण के विराट व्यक्तित्व एवं कृतित्व का वर्णन किया है। इसके बाद रत्नचन्द शर्मा ने पाँच महाकाव्य लिखे- ‘निषादराज’, ‘अग्निपरीक्षा’, ‘अश्वत्थामा’, ‘रामराज्य’ और ‘वनगमन’। ‘अश्वत्थामा’ का कथानक महाभारत के सौप्तिक पर्व के संक्षिप्त घटना-क्रम पर आधारित है। भाव विकल, चिंतन मन अश्वत्थामा की मनोदशा का चित्र द्रष्टव्य है-

कभी विवशसता, घृणा ग्लानि के

स्पष्ट भाव थे दिखते मुख पर,

जिनसे मिली थी करुणा रचती

भाव विकलता के उस मुख पर।

और कभी था क्रोध उग्र का

भाव दिखता मुख पर उनके

फडक फडक थे उठते भुज-युग

भुज-मूलों से रह रह उनके।।[3]

अन्य महाकाव्यों के कथानक रामचरित पर आधारित हैं। ‘निषादराज’ रामायण की एक घटना पर आधारित है। इस महाकाव्य में गुह की राम के प्रति भक्ति और आत्मीयता दिखाई देती है। ‘अग्नि परीक्षा’ सीता की अग्नि-परीक्षा की प्रस्तुति हुई है। इस महाकाव्य में सीता प्रचण्ड अग्नि-परीक्षा में बैठकर अपने निष्पाप का प्रमाण देती है। ‘अश्वत्थामा’ महाकाव्य में कवि ने महाभारत के अल्पज्ञात पात्र अश्वत्थामा के जीवन-चरित को प्रस्तुत किया है। ‘रामराज्य’ रामायण के उत्तरकालीन कथानक पर आधारित महाकाव्य है, जिसके माध्यम से कवि ने एक आदर्श राज्य की कल्पना को कार्य रूप दिया है। इस महाकाव्य का मूल अभिप्रेत राम के चारित्रिक औदात्य और रामराज्य के आदर्श की प्रस्तुति है। ‘वन-गमन’ में राम के राज्याभिषेक की घोषणा से लेकर वन-गमन तक की घटनाओं की प्रस्तुति की है। ‘मानव’ के अनुसार उक्त सभी महाकाव्य प्राचीन शास्त्रीय परम्परा पर आधारित हैं। इन

www.ignited.in

महाकाव्यों के कथानक लोक-विश्रुत है तथा इनके नायक धीरोदात्त हैं।

उदयभानु 'हंस' ने दो महाकाव्यों की रचना की है- 'सन्त सिपाही' और 'हरियाणा गौरव गाथा'। 'सन्त सिपाही' में दशमेश के उदात्त चरित-दर्शन, विलक्षण-व्यक्तित्व एवं कृतित्व की प्रस्तुति की है। कवि ने इस काव्य में गुरु गोविन्द सिंह के भक्ति व शक्ति की प्रस्तुति की है। इसमें काव्यशास्त्रीय लक्षणों का समुचित निर्वाह किया है। इस महाकाव्य में गुरु गोबिन्द सिंह को धीरोदात्त नायक की संज्ञा दी जा सकती है। डॉ. मानव के अनुसार इस महाकाव्य का काव्यारम्भ प्रकृति-चित्रण से हुआ है। इस महाकाव्य में वीर, शृंगार, रौद्र, वात्सल्य, शांत आदि रसों की सुंदर प्रस्तुति हुई है।

संत 'सिपाही' में कवि ने नारी को समाज की मूल सूत्रधारिणी, गृह लक्ष्मी, कल्याणकारिणी दुर्गा आदि विशेषणों से विभूषित करते हुए उसे नर से भी महान् माना है-

नारी है वरदान प्रकृति का

परम पुरुष की आदि शक्ति का।

वह राधा का प्रणय, उमा का तप,

सीता की अटल भक्ति है।

नारी को अबला मत समझो,

नारी नर से भी महान् है।[4]

हरियाणा 'गौरव गाथा' में किसी को नायक न मानकर सम्पूर्ण हरियाणा प्रदेश के ऐतिहासिक वृत्त को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। यह महाकाव्य आठ पर्वों में विभक्त है। इसकी शैली इतिवृत्तात्मक हैं।

'धरा की यात्रा' छविनाथ त्रिपाठी द्वारा रचित महाकाव्य है। यह महाकाव्य ग्यारह सर्गों में विभक्त है। इसका कथानक बहुत संक्षिप्त है, जिसमें धरा के अतीत-पथ का आकलन किया गया है। कवि ने धरती के जन्म से उसकी जीवन-गाथा का प्रारम्भ मानकर उसके मरण-क्षण तक की कल्पना की है। यह महाकाव्य चिंतनमूलक काव्य-कृति है। कवि ने देवासुर संग्राम, आणविक अस्त्रों का प्रयोग, महाप्रलय आदि का भी वर्णन किया है। इस रचना में प्रकृति के सौम्य और रौद्र- दोनों रूपों का चित्रण हुआ है। वस्तुतरू कथ्य और शिल्प की दृष्टि से यह कृति उत्कृष्ट बन पड़ी है। इस महाकाव्य में माया और ब्रहम के समागम और विलास चेष्टाओं के प्रसंग में माया के मांसल रूप-सौन्दर्य तथा प्रथम संभोग के उपरांत लज्जाजनित अनुभवों का चित्रण बड़ा मर्म-स्पर्शी है-

कमल कली सी उभर रही तेरे उरोजों की लाज।

भ्रमर गुंजरित पायल की लय तान सजाती आज।

मचल मचल चलती बल खाती तेरे कटि की साज।

शिखर नितम्बों पर गिरती है, इन नैनों की गाज।।[5]

महाकाव्य परम्परा में पं. पुरुषोत्तमदास 'निर्मल' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने चार महाकाव्य लिखे हैं, जिनके शीर्षक हैं- 'विधुरा', 'महाभारत रत्न', 'वेणु गोपाल', 'पद्मेश'। 'विधुरा' महाकाव्य में चिर उपेक्षित एवं लोकनिन्दित कैकेयी के जीवन को प्रस्तुत किया है। 'महाभारत-रत्न' भीम पौत्र बर्बरीक के शौर्य एवं आत्मोत्सर्ग का रेखांकन किया है। यह महाकाव्य शास्त्रीय पद्धति पर आधारित है। 'वेणु गोपाल' महाकाव्य में गोपाल श्रीकृष्ण की विभिन्न घटनाओं की प्रस्तुति की है। इसमें मुरली और गिरिराज दोनों को दिव्य रूप में प्रस्तुत किया है। 'पद्मेश' में भगवान वेंकटेश्वर के प्राकट्य एवं विविध लीलाओं का मार्मिक अंकन किया है।

राणा प्रतापसिंह गन्नौरी कृत 'क्रांतिदूत महर्षि दयानंद' भी एक चर्चित महाकाव्य है। इसमें कवि ने स्वामी दयानंद के क्रांतिकारी जीवन-दर्शन तथा जीवन में आई समस्याओं का चित्रण किया है। प्रायश्चित महाकाव्य में राष्ट्र-धर्म, दलित चेतना तथा युगबोध की सुंदर प्रस्तुति हुई है।

इनके अतिरिक्त हरियाणा में अनेक महाकाव्यों की सृजना हुई जिनका विस्तृत विवेचन करना इस लेख में असंभव है। यथा- 'देवयानी' (जयनाथ नलिनी), 'मेड़ताणी मीरा' (ब्रह्मदत्त वाग्मी), 'युगान्तर' (सुगनचंद मुक्तेश), 'शिव चरित' (निरंजन सिंह योगमणि), 'सूर्यमल शौर्य गाथा' (धर्मचन्द विद्यालंकार), 'प्रायश्चित' (प्रेमनाथ प्रेमी), 'कर्ण' (देवदत्त 'देव'), 'भागीरथी' (सरूप सैलानी), 'चन्द्रिका' (लक्ष्मण सिंह), 'त्रिवेणी से त्रिलोकी' (भगवानदास निर्मोही), 'बुद्ध चरित्र' (खुशीराम वाशिष्ठ)।

महाकाव्यों की विशेषताएँ

(1) काव्य रूप:

महाकाव्य की दृष्टि से 'अश्वत्थामा 'विधुरा'', 'संत सिपाही', 'धरा की यात्रा' आदि सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य हैं। 'हरियाणा की गौरव

गाथा', 'युगान्तर', 'संत महात्मा' भी महाकाव्योन्मुखी रचनाएँ हैं। शेष रचनाओं में महाकाव्य की झलक मिलती है।

(2) कथावस्तु की विविधता:

सभी महाकाव्यों की कथावस्तु वैविध्यमुखी है। 'अग्नि परीक्षा 'निषादराज' 'विधुरा' 'अश्वत्थामा' के स्त्रोत 'रामायण', 'महाभारत' हैं, लेकिन इन काव्यों की संरचना की विविधता मिलती है। 'मेड़ताणी मीरा' राजस्थान की कवयित्री हैं। 'शिवचरित' पौराणिक आख्यान पर आधारित महाकाव्य है। 'धरा की यात्रि' चिन्तनपरक दार्शनिकता से ओत-प्रोत है।

(3) चरित्रों में रूपांतर:

कतिपय कवियों ने चरित्रों (पात्रों) का रूपांतर किया है। जैसे 'विधुरा' काव्य लिया जा सकता है। 'रामचरितमानस' में कैकेयी का चरित्र कठोरता व कुटिलता से ओतप्रोत है, लेकिन पुरुषोत्तम दास 'निर्मल' ने 'विधुरा' महाकाव्य में उसके उदात्त चरित्र को रेखांकित किया है। युद्धविद्या में निपुणता, साक्षात् ममतारूपा माँ, विश्वकल्याणकारी माँ के रूप में कवि ने चित्रण किया है। 'अग्नि परीक्षा' महाकाव्य में सीता के चरित्र में आधुनिक नारी की झलक मिलती है।

(4) युगबोध की प्रस्तुति:

युगबोध की दृष्टि से 'अग्निपरीक्षा', 'धरा की यात्रा', 'निषादराज', 'प्रायश्चित', 'संत सिपाही' आदि ओतप्रोत हैं। नारी-उत्पीडन, अणुयुद्ध, अश्पृश्यता, वर्ग-विषमता, जन शोषण आदि की झलक उक्त महाकाव्यों में मिलती है। 'प्रायश्चित' में दलित-शोषण की समस्या को उठाया गया है। 'संत सिपाही' में नारी-उत्पीडन की समस्या को प्रस्तुत किया है। 'विधुरा' और 'संत सिपाही' में राष्ट्ररक्षा का संदेश उभरा है।

(5) मानवमूल्यों का चित्रण:

हरियाणा के महाकाव्यों में मानव मूल्यों की सुंदर प्रस्तुति हुई है। 'अग्नि परीक्षा', 'अश्वत्थामा', 'निषादराज', 'विधुरा', 'संत महात्मा', 'संत सिपाही' आदि कृतियों में प्रेरम, त्याग, ममता, समता, गुरु भक्ति, विश्वबंधुत्व आदि मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है। 'निषादराज' कृति की रचना तो मानवीय मूल्यों एवं जीवनादर्शों की स्थापना हेतु की गई हैं।

(6) छंद सौष्ठव:

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि हरियाणा में रचित अधिकांश महामाव्य छंदोबद्ध हैं। कुछेक महाकाव्य छंदविहीन हैं। आजकल छंदविहीन महाकाव्य अधिक लिखे जा रहे हैं।

(7) भाषा सौष्ठव:

अधिकांश महाकाव्य खड़ीबोली में लिखे गये हैं। भाषा में कहीं-कहीं हरियाणवी, ब्रज, अहीरवाटी शब्दों का प्रयोग हुआ है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हरियाणा में महाकाव्यों की रचना कम मात्रा में हुई है लेकिन कथ्य एवं शैली की दृष्टि से ये महाकाव्य उत्तम बन पड़े हैं। विषय वैविध्य, प्रबंध-सौष्ठव, कलात्मक उत्कर्ष की

दृष्टि से सभी महाकाव्य ओतप्रोत हैं। कवियों ने महाकाव्य में भारतीय और पाश्चात्य तत्त्वों का प्रयोग किया है। वस्तुतरू महाकाव्यों का भविष्य उज्ज्वल है।

संदर्भ:

1. भामह, काव्यालंकार, 1/19/21
2. रामनिवास 'मानव', हरियाणा का हिन्दी साहित्य, पृ. 209
3. रतनचंद शर्मा, अश्वत्थामा, आठवां सर्ग, पद-16
4. उदयभानु हंस, संत सिपाही, षष्ठ सर्ग, पृ. 115
5. छविनाथ त्रिपाठी, धरा की यात्रा, पंचम सर्ग, पद सं. 3

Corresponding Author

Reena Saroha*

M.A. Hindi, UGC NET (Hindi) Research Scholar, Department of Hindi, NIILM University, Kaithal, Gaon & Post-Ranthdhana, District-Sonipat, Haryana

www.ignited.in